स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
हिन्दी विभाग
पत्र संख्या:- 06

बिहारी के दोहों की व्याख्या
दोहा संख्या:- 51, 55, 70.

दोहा संख्या:- 51. दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साईंहि न भूलि।
दई दई क्यौं करतु है, दई दई सु कबूलि॥

व्याख्या:- प्रस्तुत दोहे में भक्ति और नीति का मिला-जुला रूप है। इसलिए बिहारी का स्वर यहाँ पर उपदेशात्मक हो जाता है। संबोधनात्मकता इसी उपदेशात्मकता की पुष्टि करती है। बिहारी कहते हैं कि दुख के दिनों में न तो लंबी साँसें लेनी चाहिए और न ही सुख के दिनों में ईश्वर को भूलना चाहिए। यहाँ पर लम्बी साँसें लेना चिन्तामग्न मनोदशा का संकेत देता है। वे पाठकों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि विपत्तिग्रस्त स्थिति में तुम दई-दई अर्थात् दैव-दैव क्यों करते हो? क्यों नहीं उसे कबूल करते जिसे ईश्वर ने दिया है? यहाँ पर दई-दई में यमक अलंकार है जो 'दैव' और दिया के अर्थ को व्यंजित करता है। बिहारी प्रकारांतर से ईश्वर द्वारा दिए गए सब कुछ सुख या दुख को कबूल करने का संदेश देते हैं। ये पंक्तियाँ हमें 'गीता' की 'सुखे दुखे समे कृत्वा लाभालाभे जया जयौ' वाली मनःस्थिति में ले जाने का काम करती है। इसी भाव की व्यंजना बिहारी ने अन्यत्र भी किया है।

दोहा संख्या:- 55 सायक-सम मायक नयन, रंगे त्रिविध रंग गात।
झखौ बिलखि दुरि जात जल, लखि जलजात लजात॥

व्याख्या:- इस दोहे में प्रयुक्त उपमानों को लज्जित करने वाली नायिका की आँखों के सौन्दर्य का बखान किया गया है। अन्य शृंगारिक कवियों की तरह नख-शिख वर्णन के क्रम में बिहारी की दृष्टि भी नायिका की आँखों पर जाकर टिक जाती है और उनका संवेदनशील कवि-मन कल्पना

के संसार में गोते लगाते हुए उस सौन्दर्य का बखान करने के लिए नए-नए उपमानों को तलाशने लगता है। यहाँ पर नायिका की सखी नायिका की आँखों के बखान के लिए मायावी संध्या उपमान का प्रयोग करती है। संध्या के समय मछली पानी के तल में चली जाती है और कमल बंद हो जाते हैं जो संध्या के मायावी प्रभाव की ओर संकेत देते हैं।

संध्या के समय इन्द्रधनुषी आभा को बिखेरती हुई सूर्य की लालिमा इसी मायावी प्रभाव की ओर संकेत करती है। नायिका की सखी को श्वेत, श्याम और रतनार इन तीन रंगों से रंगे हुए नायिका के शरीर में उसके सुन्दर नेत्र ऐसे ही मायावी प्रभाव उत्पन्न करते हुए प्रतीत होते हैं। इस अद्भुत सौन्दर्य के समक्ष कमल भी शर्माने लगता है। और ये सुन्दर आँखें जिस ओर उठती हैं, मछली की तरह देखने वाले पुरुष भी पनाह माँगने लगते हैं। उनके हृदय में ऐसी हलचल पैदा होती है जिससे वे बचने की कोशिश करते हैं। इस दोहे में अनुप्रास अलंकार की योजना के जरिए संध्या और संध्या के समान मायावी प्रभाव उत्पन्न करने वाली आँखों के प्रभाव को सांकेतिक ध्वन्यात्मक योजना के जरिए भी पुष्ट करने का प्रयास किया गया है।

दोहा संख्या :- 20 .छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग।
दीपति देह दुहून मिलि दिपति ताफता-रंग॥

व्याख्या :- कहा जाता है कि विद्यापति, सूर और बिहारी इन तीनों की गणना शृंगार के श्रेष्ठ कवि के रूप में की जाती है, लेकिन इनमें भी विद्यापति को वयःसंधि चित्रण का सिद्धहस्त कवि माना जाता है। विद्यापति 'शैशव जोबन दुहु मिली गेलु गहि-गहि आलिंगन भेल' के जरिए वयःसंधि से गुजरने वाली नायिका में शैशव और यौवन के सामंजस्य से उत्पन्न होने वाली अद्भुत सौन्दर्य की ओर संकेत करते हैं, लेकिन, शैशव और यौवन के इस सुन्दर मेल के चित्रण में बिहारी भी बहुत पीछे नहीं हैं। प्रमाण है प्रस्तुत दोहा जिसमें बिहारी ने वयःसंधि से गुजरनेवाली नायिका के देह-सौन्दर्य की कांति में शैशव और यौवन के

आभासी मेल का चित्रण किया है। वे कहते हैं कि उस नवयौवना के देह से शिशुता की झलक अभी समाप्त नहीं हुई है। संकेत यहाँ नायिका के अल्हड़पन की ओर है जिसे अक्सर बचपना का पर्याय मान लिया जाता है। मतलब यह कि नायिका का लड़कपन तो चला गया है, लेकिन उसकी आभा अब भी शेष रह गई है। दूसरी ओर यौवन का अभी पूरी तरह से आगमन नहीं हुआ है, लेकिन यौवन के दस्तक के कारण उसकी आभा को देह सौन्दर्य के साथ-साथ नायिका के मानसिक धरातल पर भी देखा जा सकता है।

लड़कपन की यह आभा यौवन की आभा से मिलकर नायिका के देह सौन्दर्य को दीप्त कर रही है। यह प्रभाव ठीक उसी प्रकार का है जिस प्रकार का प्रभाव ताफ्ता रंग के वस्त्र का होता है जो एक कोण से देखने पर गहरे हरे रंग का दिखाई पड़ता है, तो दूसरे कोण से देखने पर गहरे लाल रंग का। इसी प्रकार नायिका की देहकांति भी कभी उसकी बचपना का आभास देती है तो कभी उसके युवती होने का।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU-MUZAFFARPUR)
मो०- 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक 24/07/2020